**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 15-02-2025, Accepted: 16-03-2025, Published: 31-03-2025**
**Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 90-92**

# हरमहेन्द्र सिंह बेदी के काव्य में संवेदना

**शगनप्रीत कौर**
हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब, भारत

**सारांश**
डॉ हरमहेन्द्र सिंह बेदी जी एक कालजयी साहित्यकार हैं क्योंकि कालजयी साहित्यकार वहीं होता है जो युग चेतना एवं युग संवेदना से अनुप्राणित होकर आगे बढ़ता हो। इनकी रचनाओं में उस आधुनिक युग–बोध का विश्लेष्ण है जो इनके समकालीन है। बेदी जी ने अपने समय के समाज में जो देखा और भोगा उसका यथार्थ चित्रण अपने काव्य में कर डाला। कहा जा सकता है कि इन्होंने अपने परिवेश को ही अपनी कविता का मुख्या आधार बनाया है। इनके काव्य का अध्ययन करने के पश्चात् देखा जा सकता है, इन्होंने अपने काव्य में सर्वहारा वर्ग की दशा का चित्रण करने के साथ मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन की व्याख्या और शहरी जीवन की समस्याओं को भी उजागर करने का सफ़ल प्रयास किया है। इनकी कविताएं यहाँ समाज की दशा और दिशा का चित्रण करती हैं, वहीं पर समाज को जागरूकता और चेतना का संदेश भी देती हैं।

**मूल शब्दः** संवेदना, समकालीन, यथार्थ, मानवीय, अति–आधुनिक, अनुभूति, अजनबीपन

समाज जिसमें मानव विचरण करता है और जिसके अभाव में मानवीय जीवन असम्भव सा प्रतीत होता है। मनुष्य समाज में रहते हुए ही एक दूसरे से प्रेम और सहभाव के संबंध स्थापित करता है ऐसे समाज का प्रतिनिधित्व रचनाकार करता है, वह अपनी कलाओं या रचनाओं के माध्यम से समाज की प्रत्येक गतिविधियों की जानकारी प्रदान करता है। भूतकालीन परिवेश कैसा रहा होगा? इसकी पूर्ण जानकारी हमें साहित्य के माध्यम से ही प्राप्त होती है। साहित्य को यहाँ हम मानवीय गतिविधियों का प्रतिबिम्ब कहते हैं वहीं पर साहित्य मानवीय विकास में सहायक भी माना जाता है। साहित्यकार का प्रेरणा क्षेत्र समाज होने के कारण साहित्यकार अपने अनुभवों को अपनी रचनाओं में स्थान देता हैं। इसीलिए साहित्यकार को समाज का कुशल चित्रकार भी कहा जाता है, जिस साहित्य में मानव समाज का यथार्थ चित्रण नहीं होता वह शीघ्र ही विस्मृति के अन्धकार में खो जाता है। अतरू अपने समकालीन समाज की अभिव्यक्ति ही साहित्य को प्राणवत्ता प्रदान करती है। मुंशी प्रेमचंद के शब्दों में– "साहित्य का आधार जीवन है और इसी आधार पर साहित्य की दीवार खड़ी है।"[1] साहित्यकार अपने विचारों की अभिव्यक्ति साहित्य की अलग–अलग विधाओं के माध्यम से करता जैसे कि कविता, कहानी, नाटक, निबंध इत्यादि जिसमें से कविता को अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त और प्राचीन माध्यम माना गया है। कविता में कवि जितनी गहनता से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता उतनी ही सुन्दरता के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत भी करता है। गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार– "भावनाओं को आन्दोलित करने की जो शक्ति कविता में है, वह साहित्य के किसी अन्य रूप में नहीं मिलती"।[2] अर्थात् कम से कम शब्दों में भावों को व्यक्त करने का सबसे सुंदर माध्यम कविता ही हो सकती है। प्राचीन आचार्य ने भावनात्मक साहित्य को ही काव्य माना है। अंग्रेजी विद्वान रिचडर्स का भी मानना है कि– कविता अनुभूतियों का एक वर्ग है अर्थात् सहृदय की अनुभूति का गहन संबंध मानव हृदय से होने के कारण कवि अपने हृदय की अनुभूतियों को ही पाठक वर्ग तक पहुंचता है।[3]" अर्थात् जब तक जीवन जगत और प्रवृति को देखकर मानव मात्र का हृदय स्पन्दित होता रहेगा। तब तक काव्य में उसके प्रति क्रियाओं को शब्दबद्ध किया जाता रहेगा। अतः कहा जा सकता है कि जब तक मानव मन में भावनाओं को उद्धोलित करने की क्षमता है तब तक काव्य में अनुभूतियों का सृजन होता रहेगा। अनुभवों और अनुभूतियों की हृदय से हृदय तक की यात्रा में मुख्य भूमिका संवेदना की होती है क्योंकि सहृदय के हृदय में स्थित गहन भाव की अनुभूति का नाम संवेदना है साहित्यकार की संवेदनशीलता ही साहित्य को विशेषता प्रदान करवाती है। अंग्रेजी विद्वान टी एस इलियट का भी मानना है कि रचनाधर्मी संवेदना समाज को नूतन अनुभूतियां प्रदान करती है परिचित अनुभूतियों का नवीन बोध कराती है और जिन अनुभूतियों को हम जानते हैं किन्तु जिनके परिणाम स्वरूप हमारी चेतना का विस्तार और संवेदना शक्ति का परिष्कार होता है।" अर्थात् कहा जा सकता है कि मन में किसी भी घटना, वस्तु या पदार्थ को देखकर उठने वाले भाव ही संवेदना कहलाते हैं। आज का कवि अपने भावों को व्यक्त करने के लिए शब्दडम्बरों का सहारा नहीं लेता वह कविता को सामान्य जन के लिए लिखता है, ऐसे ही समकालीन हिंदी कविता के नामवर कवि हरमहेन्द्र सिंह बेदी हैं जिन्होंने पंजाब के हिंदी सहित्य की रष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने में अपना भरपूर योगदान दिया। इनकी कविता मानवीय उर्जा के साथ–साथ मानवीय संबंधों को बाहरी और भीतरी स्तर पर अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। इनकी कविताएँ उन संवेदनाओं को मुखरित करती हैं जो काव्य की उत्स भूमि हो और इसके साथ इनके काव्यों में सपनों की अनुभूति को नए ढंग से महसूस किया जा सकता है। कहा जा सकता है कि इनकी कविताओं में ऐसा राग है जो पाठकों को भीतर तक झकझोर देता है और जिसमें से संवेदना के अनूठे रागों की पहचान होती है। कहा जा सकता है कि इनके काव्य में समाज के अनेकों रंग विद्यमान हैं।

डॉ हरमहेन्द्र सिंह बेदी ने समाज में व्याप्त गरीबी के प्रति, मजदूरों के प्रति बड़े मार्मिक ढंग से अपने विचारों को व्यक्त किया है। इनकी कविताएं जन साधारण की गहरी समस्याओं एवं समाज में व्याप्त अनेकों विसंगतियों जैसे तनाव, चिंता, वेदना, घुटन, इत्यादि को भी वाणी देती हैं। हरमहेन्द्र सिंह बेदी की कविताएँ शहर, जंगलनुमा शहर, दहशत, सन्नाटा, इतिहास की विसंगतिया, विसंगत परिवेश, विधूषक बना आदमी, संबंधो के अजनबीयता इत्यादि संदर्भो के बीच कार्यरत हैं। इनकी कविता में संवेदना में कोई बिन्दु न केवल प्रेरक होता है बल्कि संघर्ष की निरन्तरता का आधार भी होता है और संकल्प का पर्याय भी है। बेदी जी की कविता में संवेदना का वह बिदु हैं – प्रकृति, गाँव की मिट्टी, उसकी भीनी गंध, उससे जुड़े मानवीय रिश्ते हैं। डॉ रमेश सोबती के शब्दों में दृ"आधुनिक जीवन की समस्याओं, जटिलताओं एवं

विसंगतियों को अपनी कविताओं में प्रस्तुत कर इनसे जुड़ने की बात अत्यंत सरलता से डॉ बेदी कह देते हैं।"[4] कहा जा सकता है कि कवि ने अपनी कविताओं में अपने संकल्प–सत्य को उजागर किया है और कवि की आत्मसजगता समकालीन है तथा परिदृश्य को समझने में सहायक बनी है। इतना ही कहा जा सकता है कि इनकी कविताएं समकालीन जीवन की व्यथा सुनाती हैं। किसी और दिन काव्य संग्रह की कविता 'सर्दी की बारिश' में कवि कहते हैं कि–

"सर्दी में बारिश हुई
ठिठुर गए
अंदर– बाहर
रिक्शाचालक और भिखारी
ठुठे में ठूठ रहीं बूंदें
तन–मन भिगोती
कांपती ऊँगलिया सब ओर"[5]

इन पंक्तियों में कवि गरीब, मजदूर व् सर्वहारा वर्ग के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट करते दिखाई देते हैं। बेदी जी की कविताएँ ऐसे असहाय, अकेले, मेहनती लोगों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। इनकी कवितायों ने आम आदमी के खिलाफ़ हो रहे अत्यचार, शोषण, अन्यय के खिलाफ़ अपना स्वर मुखरित किया है। जमीन से जुड़ा कवि ही ऐसी समस्याओं को अनुभव कर सकता है। ऐसे ही भावों को व्यक्त करती हुई 'ताजमहल' कविता की पंक्तियों को पढ़ सकते हैं। जिसमें कवि मानवीकरण अलंकार के माध्यम से आम जन की दीन–हीन दशा का चित्रण ताजमहल जैसी पत्थर की इमारत के तुलना रूप में करता है जिसमें वह कहते हैं कि–

"मैंने देखा रोता हुआ ताजमहल
मुरदा एहसासों में
जान कहा थी बारिश की बूंदों में प्यास कहा थी
खूबसूरत से पत्थर खड़े थे
नक्काशी भी खास थी
बारिश धो देती थी
चमका देती थी ताजमहल के आंसू"[6]

इन पंक्तियों से मालूम होता है कि कवि का हृदय कितना कोमल है जो हज़ारों वर्षों बाद भी ताजमहल जैसी अत्यधिक सुंदर भव्य इमारत के पीछे लाखों–मजदूरों के आँखों को दुःख तकलीफ़ महसूस कर सकता है। कहा जा सकता है बाहर से खुश और आकर्षक दिखाई देने वाले मनुष्य अपने भीतर कितने ही दुःख तकलीफ़ का तूफ़ान झेल रहा होगा इतना ही नहीं आज के इस बदलते परिवेश ने भी कवि को झकझोरा है। कवि इस हो रहे गंभीर परिवर्तन को सहज ही स्वीकार नहीं कर पा रहा। कह सकते हैं कि कवि इस कविता के माध्यम से पुरानी पीढ़ी की व्यथा को उजागर करने का प्रयास कर रहा है। 'गर्म लोहा' काव्य संग्रह की 'शहर और भीड़ ' कविता में कहते हैं कि–

"कोई क्या करे ?
अँधेरा नहीं फटता–
सब लोग
क्लॉक टावर–से
शहर में फैल गए हैं"

इन पंक्तियों के में शहरी जीवन का संत्रास और उससे भयभीत कवि की मानसिकता की झलक साफ़ देखी जा सकता है जिससे स्पष्ट होता है कि इन मशीनीकरण के युग ने मनुष्य की आज़ादी छीन ली गई है और वह भी घड़ी की सुइयों की भांति बिना रुके इधर–उधर भाग रहा है। आज इस मशीनीकरण की लपेट में गाँव भी आ गए हैं क्योंकि वह भी शहरी वातावरण के कारण और उनकी देखा–देखी अजनबियों की तरह व्यवहार कर रहे हैं। वह गाँव या घर आज नज़र नहीं आते जहाँ पर सभी लोग इकट्ठे बैठा करते अपना सुख–दुःख बाँटा करते थे। आज घर घर न रह कर केवल मकान बन कर रह गए है ऐसी ही विडम्बना को कवि 'लहर–लहर' काव्य संग्रह की कविता 'मिलन जल' में कहते हैं कि–

"सभी रिश्ते देख रहें हैं
कब खुलें
बिन थेटी
बढ़ जाए भीतर तक
उठा ले कप चाय का बेझिझक
बे सब लोग सुना दे"[7]

इन पंक्तियों में कवि रिश्तें के प्रति अपने स्नेह को प्रकट करते नज़र आते है वह इस भूमंडलीकरण के दौर में मशीन बन चुके इंसानों से आज भी उम्मीद लगाए बैठे है कि वह समय आएगा जब सब एक छत के नीचे मिल बैठ कर तकलीफ़ खायेगे–पियेगे और बिना किसे औपचारिकता के एक दुसरे के घर जायेंगे। कवि इस अति आधुनिक युग के आदमी के सच को बयान करते हुए रिश्तों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कहते हैं।

" दिन भर दो गज की दूरी पर
कमरे में ही
रूप रंग भी बदल रहा है
घर का नक्शा
मेज कुर्सी और किताबें
अपनी अपनी जगह बदल रहें हैं"[8]

कवि इस बदलते परिवेश के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज सब कुछ बदल रहे हैं पुरानी परम्पराएँ पुराने रीती–रिवाज़ खान–पीन सबकुछ पीछे छूट गया है। हरमहेन्द्र सिंह बेदी की कविता में समाज के प्रत्येक पहलू, प्रत्येक अंग को चित्रित किया गया है। समाज में फैली कुरीतियों, कुप्रथाओं, हत्या, संहार, अत्याचार को जब कवि देखता है तो और इन्हें दूर करने का संकल्प करता है और एक आदर्श समाज की नींव रखने के लिए संघर्षरत रहने की प्रेरणा भी देते हुए कहते हैं कि दृ

"मैं ले आऊंगा
पूरी बस्ती को
यातना मुहिम से निकाल
खत्म होगी सन्नाटे की दहशत
खुल जायेगा
शब्दों का रास्ता अपने आप[9]"

इन पंक्तियों में कवि समाज निर्माण की गहरी चिंता लिए हुए हैं वह सामाजिक अव्यवस्था, आराजकता, भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहते हैं। ऐसी ही अनेकों कवितओं के माध्यम से कवि आम जन को इन समस्याओं से संघर्ष करने प्रेरणा भी देता है।

## निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि हरमहेन्द्र सिंह बेदी की कविताओं में युग चेतना का सामाजिक संदर्भ बहुत विस्तृत और विश्वसनीय है। आज हमारा समाज चाहे कितना भी आगे बढ़ चुका है लेकिन वर्तमान समाज में शोषण का बोलबाला है, लोग भय और संत्रास

में जी रहे हैं। 'सन्नाटे की दहशत', 'धूप सागर' और 'मैं' आदि कविताओं में मजदूर वर्ग के दर्द को बयान कर 'कविता और जिन्दगी' में जीवन को संघर्ष से भरा बताया है आज का जीवन सरल नहीं हैं। महानगरीय जीवन तथा वहाँ की समस्याओं का वर्णन करते हुए परिवेश में व्याप्त अकेलेपन और अजनबीपन का वर्णन 'अहसासों का रिश्ता' कविता में किया गया है नारी की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण भी अनेकों कविताओं में मिलता है। कवि अपने काव्य में भारतीय समाज की भावुकता को प्रतिपादित करते हुए, वसुधैव कुटुम्बकम् की पावन विचारधारा को साथ लेकर चलते हैं और साथ ही कवि जन साधारण को निराशा, निष्क्रियता, अकर्मण्यता, आलस्य का त्याग कर निरंतर कर्मशील और जागरूक रहने की भी प्रेरणा देते हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ


1. प्रेमचंद, कुछ विचार, अनन्य प्रकाशन, 2025 पृष्ठ–21
2. गणपति चन्द्र गुप्त, भारतीय एवं पश्चात्य काव्य सिद्धांत, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली, 2014, पृष्ठ– 59
3. डॉ नगेन्द्र (संपा),पाश्चत्य काव्य शास्त्र की परम्परा, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृष्ठ–219
4. उदृत, महेश 'दिवाकर' (संपा), प्रो हरमहेन्द्र सिंह बेदी अभिनंदन ग्रन्थ, आखिल भारतीय साहित्य कला मंच, उ.प्र, 2011,पृष्ठ–88
5. हरमहेन्द्र सिंह, किसी और दिन,
6. हरमहेन्द्र सिंह, किसी और दिन,
7. हरमहेन्द्र सिंह, लहर–लहर, 2020 पृष्ठ –18
8. वहीं पृष्ठ– 33
9. हरमहेन्द्र सिंह, गर्म लोहा, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2010 पृष्ठ–12–13